

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा जानना, सत्र 11, विवेक की भूमिका

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर हमारे व्याख्यान में आपका स्वागत है। यदि आप विषय-सूची की समीक्षा करेंगे तो हम यहाँ संदर्भ में वापस आ जाएँगे। हमने अभिविन्यास और परिचय के साथ शुरुआत की; फिर हमने इस बारे में बात की कि ईश्वर की इच्छा की समझ कैसे शास्त्र पर आधारित है।

हमने इस बात का थोड़ा सा अवलोकन किया कि पश्चिमी चर्च, विशेष रूप से वेस्लेयन काड़ी त्रिभुज के साथ, किस तरह से चीजों का निर्णय करता है, विशेष रूप से बड़े चर्च के लिए, बड़े मुद्दे शामिल हैं। हमने पुराने नियम और नए नियम के बारे में बात की और परमेश्वर की इच्छा के संबंध में कई चीजें देखीं जो सर्वोच्च हैं और परमेश्वर की इच्छा नैतिक है, और यह कि व्यक्तिगत इच्छा की खोज जैसी कोई चीज नहीं है। व्यक्तिगत इच्छा शास्त्र के साथ हमारा संबंध है, परमेश्वर की शिक्षा के साथ हमारा संबंध है, और यह हमारे लिए बहुत व्यक्तिगत है, लेकिन यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे हमें खोजना है।

यह कुछ ऐसा है जो हमें करना है, और यहाँ तक कि बाइबल में इन संदर्भों में क्रियाएँ भी करने के लिए हैं, खोजने के लिए नहीं। फिर हमने विवेक के बारे में बात की, जिसके लिए एक विश्वदृष्टि और मूल्यों के मॉडल की आवश्यकता होती है क्योंकि निर्णय लेने का यही सामान्य तरीका है। यह आपके मुद्दे को लेना है और इसे पवित्रशास्त्र के बारे में जो आप जानते हैं उससे जोड़ना है, खुद से पूछना है, क्या बाइबल में कोई सीधा पाठ है जो मेरे प्रश्न का उत्तर देता है, या मुझे शिक्षण के निहितार्थों की तलाश करनी है, या क्या मैं उच्च स्तर पर जाता हूँ जिसे हम रचनात्मक निर्माण कहते हैं जहाँ हम अपने उत्तर पाते हैं, और यह वह स्तर है जहाँ हमें बहुत अधिक विविधता मिलती है।

आज चर्च में हमारे पास अंशों और धार्मिक बिंदुओं के बारे में कई अलग-अलग विचार हैं, और यह कुछ ऐसा है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के परिवेश में काम करना होता है। फिर तीसरा भाग जहाँ हम अब आते हैं, जिसे मैं विवेक कहता हूँ, जिसके लिए व्यक्तिपरक मुद्दों को समझना और संबोधित करना आवश्यक है। ये कई लोगों के लिए सबसे कठिन हैं क्योंकि कई लोग इस धारणा के साथ जीते हैं कि उनके अंदर की छोटी आवाज़ें ईश्वर हैं जो उनसे बात कर रहे हैं, उन्हें बता रहे हैं कि क्या करना है, और अच्छा महसूस करने के लिए किसी तरह की भावनाओं की तलाश कर रहे हैं, उदाहरण के लिए शांति की तलाश कर रहे हैं, और हम व्यक्तिपरक चुनौतियों के माध्यम से इनमें से कई मुद्दों पर बात करेंगे। हम आज विवेक की भूमिका से शुरुआत करने जा रहे हैं।

यह व्याख्यान संख्या 11 है, जो आपके नोट्स में जीएम संख्या 11 है। इस बार आपके नोट्स में कई चीजें हैं। आपके पास व्याख्यान नोट्स हैं, जो विवेक और निर्णय लेने की रूपरेखा तैयार करते हैं।

मैंने एक लेख शामिल किया है जो मैंने एक शब्दकोश के लिए लिखा था, जो कि हम जिस बारे में बात करने जा रहे हैं उसके बारे में पढ़ने का एक अच्छा वर्णनात्मक तरीका है, और मैंने आपको एक डेटाबेस भी दिया है। मैंने आपको घटनाएँ दी हैं ताकि आप देख सकें कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। इसमें आपको थोड़ा और समय लगेगा, लेकिन मैं आपको एक डेटाबेस दे रहा हूँ ताकि आप अपना होमवर्क खुद कर सकें।

ठीक है, तो चलिए विवेक और नए नियम के बारे में बात करना शुरू करते हैं। अब, विवेक के बारे में बहुत सी रूढ़ियाँ हैं, और हम इसके बारे में थोड़ा सा उल्लेख करेंगे। हम विवेक के क्षेत्र के बारे में बात करने जा रहे हैं, यह क्या है, इसकी परिभाषा, और विवेक पर बाइबिल का ध्यान।

मैंने आपको वह लेख बताया जिसे आप पढ़ सकते हैं, जो आपकी मदद करेगा, और आपके सामने जो नोट्स हैं - कुछ रूढ़ियाँ। कई बार, लोग सोचते हैं कि विवेक किसी तरह का आंतरिक श्रोता कक्ष है, जहाँ दूसरे प्राणियों, शायद ईश्वर, के साथ सीधे संवाद किया जा सकता है।

कुछ लोग तो शैतान को भी दोषी ठहराते हैं। वे कहते हैं कि शैतान ने मुझे ऐसा करने के लिए कहा था। एक प्यारी सी कहावत है: मैं बस वही करता हूँ जो छोटी आवाज़ें मुझे करने के लिए कहती हैं।

खैर, यह जीवन के प्रति एक अच्छा दृष्टिकोण नहीं है क्योंकि सीरियल किलर वही करते हैं जो छोटी आवाज़ें उन्हें करने के लिए कहती हैं। और इसलिए, अगर हम ईश्वर का अनुसरण करने जा रहे हैं, तो हम अपनी आत्म-चिंतन क्षमता पर आक्रमण को ईश्वर के बराबर नहीं होने दे सकते। हमारे पास केवल शास्त्र है।

जब आप ये आवाज़ें सुनते हैं, तो आप खुद से बात कर रहे होते हैं। यह एक आंतरिक पहलू है, और यह विवेक का हिस्सा है, और यह आत्म-चिंतन के लिए ईश्वर की छवि में बनाई गई ईश्वर प्रदत्त क्षमता है, और हम इसके बारे में विस्तार से बात करेंगे। इसके अलावा, कुछ लोग कहते हैं कि विवेक आत्म-चिंतन के लिए बनाई गई क्षमता है।

जैसा कि मैंने बताया, यह हम खुद से बात कर रहे हैं। यह एक आंतरिक मूल्य भाषण है, और मैंने आपको पहले भी बताया है कि आपके पास विश्वदृष्टि है, और डेटा विश्वदृष्टि के माध्यम से चलाया जाता है, और अर्थ दूसरी तरफ से निकलता है। अपने मन के अंदर, आप लगातार चीजों को उलझाते रहते हैं।

कभी-कभी आपके मन में विचार आते हैं, और आप कहते हैं, ठीक है, शायद यह भगवान मुझसे बात कर रहे हैं, या शायद यह वास्तव में ईश्वर द्वारा दी गई आत्म-चिंतन की क्षमता है जो ईश्वर ने आपको दी है। और ऐसे क्षण आते हैं जब हम किसी चीज़ का अध्ययन करते हैं, और अचानक, हम उसे समझ जाते हैं, और यह हमें स्पष्ट रूप से समझ में आता है। हमें इसे थोड़ा-बहुत समझने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन दिन के अंत में, कोई भी व्यक्ति अपने द्वारा दावा की गई व्यक्तिपरक चीज़ों को साबित नहीं कर सकता है।

हमारे पास एकमात्र ठोस चीज़ है जो हमारे दावों का ईश्वर की शिक्षा की समझ के साथ सहसंबंध है। तो, विवेक एक आकर्षक चीज़ है, है न? और हम केवल बाइबिल के अंशों के बारे में बात कर रहे हैं। मनोवैज्ञानिक विवेक का उपयोग करते हैं और इसके बारे में बात करते हैं; इस तरह की चीज़ों के बारे में उनका अपना दृष्टिकोण है।

तो, यह कई अलग-अलग तरीकों से सामने आता है। मैं चाहता हूँ कि आप इस पर विचार करें, चाहे वह सच हो या झूठ। विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाएँ।

खैर, मैं यह बहुत सुनता हूँ। मेरी अंतरात्मा ने मुझे बताया कि यह ठीक है, पादरी, इसलिए आपको मेरे सामने झुकना होगा। दूसरे शब्दों में, लोग आपके कार्यालय में आते हैं, और वे आपको अपनी आंतरिक आवाज़ों के ज़रिए हेरफेर करेंगे।

और आप यह जानते हुए भी बैठे रहते हैं कि यह उचित नहीं है। और फिर भी, आप उन्हें इस तरह की सोच से बाहर निकलने में कैसे मदद करते हैं? विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाना गलत है। विवेक आपका मार्गदर्शक नहीं है।

आपका विश्वदृष्टिकोण और आपके मूल्य आपके मार्गदर्शक हैं। विवेक उन लोगों के लिए एक गवाह है जो आंतरिक प्रक्रिया में हैं और आपको याद दिलाना है कि यह आपका विश्वदृष्टिकोण है, यह आपके मूल्य हैं। और फिर भी, उसी समय, हम पॉलीन की स्थिति से जानते हैं कि विवेक आपको बता सकता है कि क्या ठीक है जब यह ठीक नहीं है।

इसलिए, विवेक आपका मार्गदर्शक नहीं हो सकता। विश्वदृष्टि और मूल्य ही आपके मार्गदर्शक हैं। लेकिन विवेक ईश्वर द्वारा दिया गया एक आंतरिक परिसर है जो आपको विश्वदृष्टि और मूल्यों के बारे में याद दिलाता है।

आपको उनका मूल्यांकन करना होगा। आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि आपका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सही हैं। फिर, समय के साथ विवेक सही हो जाता है।

पौलुस ने सोचा कि जब उसने मसीहियों को मारा और उन्हें सताया तो वह परमेश्वर की सेवा कर रहा था। साथ ही, हम जानते हैं कि पौलुस गलत दिशा में जा रहा था। वह अपने विवेक से इतना दोषी था कि उसके मूल्य सही थे।

यीशु को दमिश्क के रास्ते में उसे रोकना पड़ा और उसका ध्यान आकर्षित करना पड़ा ताकि वह पॉल की सोच को बदल सके। और जब वह परिवर्तित मन हुआ, तो पॉल ने एक बड़ा बदलाव किया, जैसा कि हम अच्छी तरह जानते हैं। क्या लूथर ने प्रसिद्ध कहावत कही थी, अपने विवेक के विरुद्ध जाना न तो सही है और न ही सुरक्षित।

मैं यहीं खड़ा हूँ, मैं इसके अलावा कुछ नहीं कर सकता। खैर, यह एक महान कथन था। यह एक सच्चा कथन था क्योंकि उसकी अंतरात्मा ने उसे दोषी ठहराया था।

और मार्टिन लूथर का विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सही साबित हुए। और इसीलिए वह इस तरह का बयान दे सकता है। लेकिन सच तो यह है कि हमारा विश्वदृष्टिकोण और मूल्य हमारे निर्णयों का आधार हैं, न कि हमारा विवेक।

विवेक केवल एक आत्म-चिंतनशील क्षमता है। विवेक केवल साक्षी हो सकता है और उस शब्द साक्षी को रेखांकित कर सकता है। साक्षी ही मुख्य शब्द है।

और जब आप डेटाबेस देखेंगे तो आप इसे देखेंगे। साक्षी विवेक के अर्थ के लिए मुख्य शब्द है। और यह दिलचस्प है कि विवेक और आत्मा दोनों को बाइबल में साक्षी की अवधारणा के तहत दर्शाया गया है।

आत्मा वचन की साक्षी है, हमारे आंतरिक अस्तित्व की साक्षी है कि हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारा पिता है और हम उसके बच्चे हैं। ऐसे कई ग्रंथ हैं जो इस बारे में बात करते हैं। इसलिए, विवेक केवल उसी चीज़ की गवाही दे सकता है जो मौजूद है।

विवेक कोई कानून बनाने वाला नहीं है, लेकिन यह उस कानून का गवाह है जिसे आप पहचानते हैं और लागू करते हैं। ठीक है। इसके अलावा, विवेक आत्म-चिंतन की आंतरिक आवाज़ है।

इसलिए, हम शब्द का उपयोग करते हैं, और बाइबल इस शब्द का उपयोग विशेष रूप से विवेक के बारे में करती है जो हमारे भीतर एक आंतरिक साक्षी है। यह भगवान के लिए एक दर्शक कक्ष नहीं है। यह शैतान के लिए एक दर्शक कक्ष नहीं है।

यह हम खुद से विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली के दृष्टिकोण से बात करना है जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। मूल्यों के अनुसार विवेक चलता है। यदि आप अपने विश्वदृष्टि और मूल्यों के अनुसार जी रहे हैं, तो आपको अच्छा लगेगा।

आपको शांति मिलेगी। और यही सही प्रक्रिया है। समस्या यह है कि हमें सतर्क रहना होगा ताकि हमारा विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सही रहें।

क्योंकि अगर वे सही नहीं हैं, तो हमें दोषी नहीं ठहराया जाएगा। क्यों? क्योंकि विवेक केवल उस विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली से संबंधित होने में सक्षम है। आप जानते हैं, यह एक दुखद बात है क्योंकि आप जीवन से गुजरते हैं, और मुझे लगता है कि शायद हर किसी ने एक समय या किसी अन्य पर इसका अनुभव किया है।

ऐसे ईसाई भी हैं जो बहुत दुष्ट हो सकते हैं। नैतिक रूप से इतना नहीं, लेकिन वे दूसरों के साथ अपने संबंधों में बहुत दुष्ट हो सकते हैं। वे चालाकी कर सकते हैं।

वे आलोचनात्मक हो सकते हैं। वे गपशप कर सकते हैं और इससे अच्छा महसूस कर सकते हैं। क्यों? क्योंकि उनका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य गड़बड़ हैं।

यही है परिवर्तित मन का सार। आपको अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों में परिवर्तन करना होगा, और तब आपके विवेक के पास काम करने के लिए कुछ अच्छा होगा। और कभी-कभी, इसमें थोड़ा समय लगता है।

मैंने आपको बिलियर्ड्स के बारे में वह कहानी सुनाई थी जब मैं छोटा था और पूल खेलता था और अपने चाचाओं को देखता था। और मैंने सीखा कि बिलियर्ड्स एक बुरी जगह थी। वे एक पापी बार में थे, ऐसा कहा जा सकता है।

और जब मैंने देखा, जब मैंने उस ईसाई सेवा केंद्र में बिलियर्ड्स सुना और पूल टेबल देखी, तो मैंने खुद से सोचा, यह ईसाई नहीं हो सकता। लेकिन समस्या बिलियर्ड्स नहीं थी। समस्या वह संदर्भ था जिसमें मैंने इसे समझा।

मेरी अंतरात्मा मुझे उन पूल टेबल के साथ वहाँ होने से परेशान कर रही थी। क्यों? क्योंकि मेरे पास अभी भी विश्वदृष्टि और मूल्य थे, वह पूल गलत था क्योंकि जिस संदर्भ में मैंने इसके बारे में सीखा था। लेकिन अंततः, मुझे एहसास हुआ कि यह पूल टेबल नहीं था।

यह उनका संदर्भ था। यह वह जगह थी जहाँ वे थे। यह वह था कि लोग इसे कैसे खेल रहे थे, खेलते समय वे क्या कर रहे थे।

यह विश्वदृष्टि और मूल्यों और आपके विवेक का संबंध है। आपका विवेक उन चीजों का साक्षी है। इसलिए, यदि आपका विश्वदृष्टि और मूल्य दोषपूर्ण हैं, तो आप ठीक महसूस करेंगे।

क्यों? क्योंकि आपका विवेक इस बात का गवाह है कि आपने क्या पहचाना है और उचित तरीके से लागू किया है। जब कोई आपके पास आता है और आपको बताता है कि आपके दिमाग को बेहतर तरीके से बदलने की ज़रूरत है, तो आपको इस मुद्दे के बारे में गहराई से सोचने की ज़रूरत है, और आप अपना मन बदल लेते हैं। और अचानक, अब विवेक के पास गवाही देने के लिए एक और चीज़ है।

और यह एक बदलाव है। कभी-कभी, विवेक को समझने में थोड़ा समय लगता है क्योंकि वह उस विश्वदृष्टि और जटिल मूल्यों का आदी हो चुका होता है। ठीक है।

विवेक का क्षेत्र। यह एक आंतरिक आलोचनात्मक आत्म-जागरूकता है। यही विवेक है।

आपके मन में जो विचार हैं, वे आप खुद से बात कर रहे हैं। यह विश्वदृष्टि और मूल्यों को देखने की अंतरात्मा की प्रक्रिया है जो आपको उन चीजों के बारे में आत्म-जागरूक बनाती है, जिन पर आप विश्वास करते हैं। यह एक आंतरिक साक्षी है, और साक्षी होना ही कुंजी है।

यह विश्वदृष्टि और मूल्यों का साक्षी है। इसके अलावा, यहाँ एक छोटी सी छड़ी है जो हमारे पास कई बार आई है। डेटा आता है, यह आपके विश्वदृष्टि और मूल्यों के ग्रिड से होकर गुजरता है, और विवेक इसकी जाँच करता है।

यह विश्वदृष्टि और मूल्यों का मध्यस्थ है। यह उन्हें प्रदान नहीं करता है। यह उनका साक्षी है, और फिर अर्थ सामने आता है।

इसलिए, अगर आप मेरे पास आकर कहते हैं कि आप कुछ करने जा रहे हैं, और मान लें कि मैं शास्त्रों के ज़रिए यह दिखा सकता हूँ, तो यह सही काम नहीं है, लेकिन आप ऐसा करने जा रहे हैं। क्यों? क्योंकि आपका विवेक साफ़ है। खैर, समस्या विवेक की नहीं है।

समस्या यह है कि विश्वदृष्टि और मूल्य विषम हैं, और उन्हें ठीक करने की आवश्यकता है। ठीक है। अब, यहाँ, यह परिभाषा है।

मैं आपको इसे पहले ही बता रहा हूँ, न कि इसे आगे बढ़ा रहा हूँ। ठीक है। लेकिन यह परिभाषा मैंने कई घंटों तक पाठ पर चिंतन करने, पढ़ने और इसी तरह की अन्य बातों के बाद तैयार की है।

और मैं इस पर आया हूँ। मुझे पता है कि यह थोड़ा सा है; यह एक अकादमिक परिभाषा है, कुछ ऐसा जिसे आपको तोड़ना होगा और सोचना होगा, लेकिन हमने इस बारे में इतनी बात की है कि आप ऐसा करना शुरू कर सकते हैं। ध्यान दें, विवेक क्या है? विवेक एक महत्वपूर्ण आंतरिक जागरूकता है।

आपको उस विशेष स्लाइड से एक बड़ी स्लाइड बनाने की आवश्यकता हो सकती है ताकि आपको इसे देखने में कोई परेशानी न हो क्योंकि यह स्लाइड पर थोड़ा छोटा है। लेकिन विवेक एक महत्वपूर्ण आंतरिक जागरूकता है, एक साक्षी है। यह शब्द है।

और जब आप उस डेटाबेस को देखेंगे जो मैंने आपको देखने के लिए दिया है, तो आप साक्षी की अवधारणा को देखेंगे। वास्तव में, विवेक से बहुत सारे विशेषण जुड़े हुए हैं: एक अच्छा विवेक, एक जला हुआ विवेक, एक विवेक जो बर्बाद हो गया है क्योंकि विश्वदृष्टि और मूल्य खराब हैं। और उस व्यक्ति ने उस दृष्टिकोण को अपना लिया है।

और इसलिए, चाहे आप उन्हें कुछ भी कहें, अंतरात्मा उनके बुरे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को देख रही है। और वे उसी स्थान पर पहुँचते हैं। अंतरात्मा महत्वपूर्ण आंतरिक जागरूकता है, मानदंडों और मूल्यों के संदर्भ में एक गवाह है जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं।

यह मानदंड नहीं बनाता। विवेक कोई सचेत साक्षी नहीं बनाता। यह मानदंड और मूल्य नहीं बनाता, बल्कि कंप्यूटर के साथ आधुनिक सादृश्य का उपयोग करने के लिए हमारे मौजूदा सॉफ़्टवेयर पर प्रतिक्रिया करता है।

यह सॉफ़्टवेयर के प्रोग्राम से ज़्यादा ऊपर नहीं जा सकता। विवेक को एक गंभीर रूप से विकसित दुनिया और जीवन के दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षित और प्रोग्राम किया जाना चाहिए। आपका विवेक इस अर्थ में शिक्षित है कि आपका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य शिक्षित हैं।

और परिणामस्वरूप, यह गवाहों के साथ संगत है। आप देखिए, यह वास्तव में विवेक के बारे में है जो आपको आपके विश्वास के अनुरूप रखता है। और यदि आप सही विश्वास नहीं करते हैं, तो आपका विवेक आपको परेशान नहीं करेगा।

इसीलिए नास्तिक को शांति और स्वतंत्र विवेक मिलता है। क्यों? क्योंकि उनका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य नास्तिकता के प्रति प्रतिबद्ध हैं। कोई ईश्वर नहीं है।

भगवान के प्रति मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं है। और इसलिए, विवेक भी इसके साथ चलता है। क्यों? क्योंकि विवेक न्यायाधीश नहीं है।

विवेक एक साक्षी है। न्यायाधीश विश्वदृष्टि और मूल्य हैं। विवेक को एक गंभीर रूप से विकसित दुनिया और जीवन दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षित और प्रोग्राम किया जाना चाहिए।

आपको अपने मन को नया करके बदलना होगा। ईसाईयों के लिए यह विकास विशेष रहस्योद्घाटन, बाइबल में निहित है। अब यह एक बहुत बड़ी परिभाषा है।

लेकिन अगर आप इसे अलग-अलग कोणों से देखें और उन चीजों के बारे में सोचें जिनके बारे में हमने बात की है, तो आप समझ जाएंगे कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन आपको यह समझना होगा कि विवेक एक गवाह है, न्यायाधीश नहीं। आप सोच सकते हैं कि यह एक न्यायाधीश है क्योंकि जब आप अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों का उल्लंघन करते हैं तो आपको बुरा लगता है, और आपका विवेक आपको परेशान कर रहा है।

लेकिन याद रखें, यह जज नहीं है। यह आपके विश्वास का गवाह है। चलिए आगे बढ़ते हैं। बाइबल संबंधी कार्य अध्ययन करते हैं।

अब, मैंने आपके लिए इसे आसान बनाने के लिए यह डेटाबेस दिया है। आप में से कुछ लोग दूसरे देशों में हैं, और आपके पास उतने संसाधन नहीं हो सकते हैं। और मैंने आपको कॉलम दिए हैं।

आप ग्रीक कॉलम को अनदेखा कर सकते हैं जब तक कि वह कुछ ऐसा न हो जिसे आपने पढ़ा हो। लेकिन मुझे इसे वहाँ रखना होगा क्योंकि जब आप गहन शब्द अध्ययन करते हैं, तो इसे उसी आधार से करना होता है। इसलिए, मैंने आपको अनुवाद दिया है, और हम इसके बारे में थोड़ी बात करेंगे।

आप देख सकते हैं कि डेटाबेस में पहले दो संदर्भ एक्लेसियास्टिकस के हैं। यह वहाँ एक्लेसियास्ट्स नहीं है। खैर, इस विशेष अर्थ में, ऐसा इसलिए है क्योंकि यह ऐसा है।

लेकिन फिर आपको बुद्धि मिली, 17:10 में बेन सिराच की बुद्धि। वे बाइबिल से इतर संदर्भ हैं और कम से कम बुद्धि का संदर्भ तो है ही। और फिर आप प्रेरितों के काम की पुस्तक शुरू करते हैं।

पुराने नियम के पाठ में विवेक शब्द नहीं आता। दिलचस्प बात यह है कि यह नए नियम में आता है। यह लगभग पूरी तरह से पॉलिन शब्द है।

प्राचीन दुनिया में यह बहुत महत्वपूर्ण था। विवेक शब्द 'जानना' क्रिया से आता है। इसलिए, खुद को जानना और खुद पर चिंतन करना ही विवेक का काम है।

अब, मैं आपके साथ अध्ययन शब्द पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ। मैं आपको ऐसा करने दूँगा। लेकिन मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ, वह सब यहीं से आता है।

मैंने बहुत सावधानी से और लंबे समय तक उन मुद्दों से निपटा और उनके बारे में सोचा। इसलिए, साथ ही, मैं एक बात कहना चाहता हूँ। विवेक जैसा एक भी शब्द धर्मशास्त्र नहीं है।

उदाहरण के लिए, यदि आपके पास पुराने नियम में विवेक नहीं है, तो आपको खुद से यह सवाल पूछना होगा, ठीक है, पुराने नियम में, मेरे पास क्या है? आपके पास एक अलग शब्द है। आपके पास हृदय शब्द है। और याद रखें, हृदय मुख्य रूप से मन का मुद्दा है, इसका मुद्दा नहीं।

यह अंग नहीं है। हमारी संस्कृति में, हृदय एक भावनात्मक शब्द है। ग्रीक संस्कृति में, स्फाग्रम करुणा की शपथ है, जैसा कि राजा जेम्स ने कहा था।

लेकिन हमने अपनी संस्कृतियों में इसे बदल दिया है। हो सकता है कि आपकी संस्कृति ने ऐसा न किया हो, और यह अच्छी बात है। लेकिन शास्त्रों में हृदय ही मन है।

एक शब्द से धर्मशास्त्र नहीं बनाया जा सकता। इसलिए, विवेक मुख्य रूप से नए नियम के भीतर पॉलिन साहित्य में है, और फिर भी इसका उपयोग किया जाता है; यह विचार अभी भी पुराने नियम में है, जैसा कि हम थोड़ी देर में देखेंगे। यह अक्सर किसी शब्द के बारे में सोचना शुरू करने का एक तरीका है, और यह मैं हूँ।

दूसरे शब्दों में, आप किसी शब्द से शुरुआत कर सकते हैं, लेकिन आपको खुद से एक सवाल पूछना होगा: क्या वह शब्द एक शुरुआत है? अवधारणा शब्द से भी बड़ी है। आपको इस संबंध में संगति के साथ सावधान रहना होगा।

जैसा कि मैंने आपको बताया है, मैंने आपके नोट्स में डेटाबेस को शामिल किया है, ताकि आप उपयोग के बारे में खुद सोच सकें। उपयोग अर्थ निर्धारित करता है। क्या आपने सुना? उपयोग अर्थ निर्धारित करता है।

यह शब्द ही नहीं है, बल्कि यह शब्द अपने संदर्भ में है। उपयोग अर्थ निर्धारित करता है, और आपको संदर्भ को देखना होगा कि क्या हो रहा है। आप देखेंगे कि साक्षी शब्द का उपयोग कहाँ किया गया है, और आप संज्ञा विवेक, एक अच्छा विवेक, एक बुरा विवेक, इत्यादि के साथ प्रयुक्त विशेषण देखेंगे, यह देखने के लिए कि यह कैसे वर्णनात्मक है।

मेरा लेख पढ़ने से पहले ऐसा करें। अंशों को देखें। यह सबसे पहली चीज़ होनी चाहिए जो आपको करनी चाहिए।

आप व्याख्यान को रोक भी सकते हैं, और मैं ऐसा नहीं करता अगर आप चाहें। कंप्यूटर के बारे में यही अच्छी बात है। इसलिए, इससे पहले कि आप मेरा लेख पढ़ें और मेरा व्याख्यान सुनें, अपने खुद के देखने और नोट्स बनाने आदि के परिणामों की तुलना करें, और फिर जब हम व्याख्यान में प्रवेश करेंगे, तो आप देखेंगे कि मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ वह उस डेटाबेस द्वारा आपके लिए प्रदान की गई जानकारी को दर्शाता है।

तो यह आपके लिए एक महत्वपूर्ण छोटा सा उपकरण है। ठीक है? अब, आगे बढ़ते हैं। विवेक की विशेषताएँ।

यहाँ, आप मेरे द्वारा दिए गए नोट्स लें। नोट्स के शीर्ष पर बाइबिल ई-लर्निंग कोर्स, विवेक और निर्णय लेने के बारे में लिखा है, और इसमें एक परिचय भी है। हम पहले ही रोमियों 12, 1 और 2, परिवर्तित मन की समीक्षा के बारे में बात कर चुके हैं।

अगर आप चाहें तो उन व्याख्यानों को वापस जाकर देख सकते हैं। विवेक एक ऐसा शब्द है जिसे हम अक्सर सुनते और इस्तेमाल करते हैं, लेकिन ज़्यादातर लोगों के लिए यह बादाम जॉय कैंडी बार की तरह है। यहाँ, एक अंतरराष्ट्रीय व्याख्यान में, यह शायद आपको समझ में न आए।

अमेरिका में, हमारे पास एक कैंडी बार है जिसमें नारियल, चॉकलेट और बादाम होते हैं। हम उन्हें बादाम जॉय कहते हैं। और जब उन्होंने इस कैंडी बार का विज्ञापन किया, तो उन्होंने एक छोटा सा विज्ञापन दिया जिसमें कहा गया था कि यह अवर्णनीय रूप से स्वादिष्ट है।

वैसे, बहुत से लोग विवेक को अवर्णनीय रूप से स्वादिष्ट मानते हैं। उन्हें इसका मतलब नहीं पता, लेकिन यह अवर्णनीय है। वैसे, विवेक उससे थोड़ा ज़्यादा है।

यह अधिक वर्णनीय है। ठीक है, तो लोग मुझसे कहेंगे, ठीक है, मेरा विवेक इसे उचित ठहराता है, या मेरे विवेक ने मुझे शांति की भावना दी है, इत्यादि। और यह सच हो सकता है क्योंकि यदि आपका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य गलत हैं, तो आपका विवेक आपको शांति की भावना दे सकता है।

जब मैं डेस्क के सामने बैठ सकता हूँ और आपको बाइबल से दिखा सकता हूँ कि आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को कहाँ सुधारना है, और यदि आप उस परिवर्तन के लिए तैयार नहीं हैं, तो आप अपने रास्ते पर जा सकते हैं, और विवेक और शांति आपके पास होगी क्योंकि आपने अपना मन नहीं बदला है। आपने अपने मन को उस दिशा में नहीं बदला है जो आपको जीवन में निर्णय लेने में मदद कर सके। विवेक विश्वदृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली का साक्षी है।

हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। विवेक हमारी सोच पर नज़र रखता है। आइए इन पर थोड़ा नज़र डालें।

यदि आप नोट्स के पहले पृष्ठ के निचले भाग को देखें, तो आप देखेंगे कि ईसाई निर्णय लेने के संबंध में विवेक की विशेषताएँ वहाँ दी गई हैं। पहली विशेषता यह है कि विवेक आत्म-आलोचना के लिए ईश्वर द्वारा दी गई क्षमता है। यह आपके लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि यह ईश्वर द्वारा दिया गया है।

उसने हमें इस क्षमता के साथ बनाया है। यह ईश्वर की छवि में होने का एक पहलू है। यह हमें आत्म-चिंतन की क्षमता देता है।

इसे सिर्फ हमसे स्वतंत्र किसी पहलू में व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह ईश्वर की आवाज़ नहीं है। यह शैतान की आवाज़ नहीं है।

यह हमारी आंतरिक आवाज़ है जो हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के संबंध में और जीवन में हमारे सामने आने वाली चीज़ों के संबंध में खुद से तर्क करती है। और यह वह परिवर्तित मन है और हमारी सोच को बाइबल और ईश्वर की शिक्षा से जोड़ता है जो हमें चीज़ों को व्यवस्थित करने में मदद करता है। इसलिए, यदि आप कहते हैं कि आपका विवेक स्पष्ट है, तो वास्तव में इसका कोई खास मतलब नहीं है।

और हम इसे बस कुछ ही पल में देखेंगे। आत्म-चिंतन हमारा खुद से खुद से बात करना है, और विवेक उस आंतरिक चर्चा के साथ जुड़कर यह जाँचता है कि हम अपने मूल्यों के अनुरूप हैं या नहीं। अब, यहाँ एक पाठ है जिसे मैं चाहता हूँ कि आप देखें।

और मैं अपनी बाइबल यहाँ वापस लाता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप 1 कुरिन्थियों 4:4 देखें। यह आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण पाठ है। 1 कुरिन्थियों 4.4। अब मुझे आपको कुछ बताना है।

मैंने आपको वर्ड के लिए जो डेटाबेस दिया है, उसमें मैंने इस बात का उल्लेख किया है। एक क्रिया है, और एक संज्ञा है। हम मुख्य रूप से संज्ञा के बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि विवेक की इस चीज़ के लिए इसका ही उपयोग किया जाता है।

और फिर भी, 1 कुरिन्थियों 4:4 में, हमारे पास क्रिया का संचालन है, और मैं आपको दिखाऊंगा कि यह कैसे काम करता है। अब, पौलुस, पहले चार अध्यायों में, अपने प्रेरित होने के लिए अपना बचाव दे रहा है और यह कि सुसमाचार का उसका संदेश सही है। इस तरह से हमें मसीह के सेवकों, परमेश्वर के रहस्यों के भण्डारियों के रूप में माना जाना चाहिए।

वे प्रबंधक हैं, हम नहीं। हम प्रबंधक हैं क्योंकि उन्होंने हमें यह दिया है। अब, हम उत्पाद के प्रबंधक हैं।

लेकिन मेरे लिए, श्लोक 2, इसके अलावा, प्रबंधकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे भरोसेमंद पाए जाएँ। वैसे, बहुत से लोग इस श्लोक को भेंट के लिफाफे में रखते हैं। यह प्रबंधकीय कार्य पैसे के बारे में नहीं है।

यह प्रबंधन आपके मस्तिष्क के बारे में है, आप कैसे सोचते हैं, आप जीवन से कैसे निपटते हैं। श्लोक 3, लेकिन मेरे लिए यह बहुत छोटी बात है कि मुझे आप या किसी मानवीय न्यायालय द्वारा न्याय किया जाए। वास्तव में, मैं खुद का न्याय भी नहीं करता।

अब यह देखिए, श्लोक 4. मुझे जानकारी नहीं है। यह संज्ञा सुनेटेसिस के लिए क्रिया रूप है, सुनोइदा, जो विवेक के लिए शब्द है। इसलिए, मुझे अपने खिलाफ़ किसी भी चीज़ के बारे में जानकारी नहीं है, लेकिन मैं इससे बरी नहीं हुआ हूँ।

प्रभु ही मेरा न्याय करता है। इसलिए, पौलुस ने खुद को परखा। उसने इसे एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया।

खुद की तलाशी ली। मुझे अपने खिलाफ़ कुछ भी पता नहीं है, लेकिन मैं इससे बरी नहीं हो जाता। यह प्रभु है जो मेरा न्याय करता है।

यह औपचारिक अनुवाद है। देखिए NIV इसका अनुवाद कैसे करता है। मेरा विवेक साफ़ है।

उन्होंने विवेक के लिए क्रिया को लिया और उसे वापस संज्ञा में बदल दिया। आप कहेंगे, बेटा, यह बहुत बुरा है। खैर, यह गतिशील तुल्यता है।

यह कार्यात्मक तुल्यता है। वे वास्तव में आपको बता रहे हैं कि यह क्या कहता है। यदि आप पढ़ते हैं, तो मुझे कुछ भी पता नहीं है। खैर, इसका मतलब है कि यह कुछ है।

लेकिन जब आप पढ़ते हैं, तो मेरा विवेक साफ़ हो जाता है, आप कहते हैं, आह। लेकिन यहाँ पेच है। लेकिन इससे मैं निर्दोष नहीं हो जाता।

क्या आपने इस पर गौर किया? पॉल ने कहा, मेरा विवेक साफ़ है, लेकिन हो सकता है कि मैं गलत हूँ। मुझे अपना न्यायाधीश बनने के लिए भगवान को बुलाना होगा। और इसलिए आप अपने पादरी के कार्यालय में जाकर यह नहीं कह सकते कि मेरा विवेक साफ़ है, इसलिए मैं यह करने जा रहा हूँ क्योंकि आपका विवेक केवल आपकी क्षमता और आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों से संबंधित है।

आप एक दुष्ट व्यक्ति हो सकते हैं और इसके बारे में अच्छा महसूस कर सकते हैं क्योंकि आपका विश्वदृष्टिकोण और आपके मूल्य बहुत गड़बड़ हैं। और इसलिए यह एक बहुत ही दिलचस्प अंश है। यहाँ एक और अंश है, थोड़ा अलग, जहाँ हम विवेक के लिए संज्ञा पर वापस जाते हैं।

रोमियों 2, 14 और 15. मुझे लगता है कि यह एक ऐसा पाठ है जो पक्षपातपूर्ण है। लेकिन जब आप नए नियम में विवेक को देखते हैं, तो यह थोड़ा बेहतर परिप्रेक्ष्य में आता है।

सबसे पहले, रोमियों 2 और आयत, आइए देखें, मैं यहाँ कितनी आयतें पढ़ना चाहता हूँ? आइए 14 पढ़ते हैं। जब गैर-यहूदियों की बात आती है, तो याद रखें, रोमियों में, पॉल यहूदियों को

संबोधित कर रहा था, और यह गैर-यहूदियों को संबोधित कर रहा है। यहाँ, वह गैर-यहूदियों के आधार पर यहूदियों की निंदा करने जा रहा है।

यह बात उन गैर-यहूदियों के लिए दिलचस्प है, जो कानून नहीं जानते। देखिए, यहूदी लोग नशे में थे।

वे अपने आप को बहुत बड़ा समझते थे। उन्हें लगता था कि वे अन्यजातियों से बेहतर हैं क्योंकि उनके पास व्यवस्था थी। वह वापस आता है और कहता है कि अन्यजाति जो स्वभाव से व्यवस्था नहीं रखते हैं वे वही करते हैं जो व्यवस्था की माँग है।

वे खुद के लिए कानून हैं, भले ही उनके पास कानून न हो। दूसरे शब्दों में, वे अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के अनुसार आपसे बेहतर तरीके से खुद को नियंत्रित करते हैं। और हम इसे तब देख सकते हैं जब आप इस समझ पर पहुँच जाते हैं। आप इसे जीवन में कई तरीकों से देख सकते हैं।

बहुत से अच्छे लोग हैं जो ईसाई नहीं हैं। और आप उन्हें गवाही देने की कोशिश करते हैं, वे आपकी बात नहीं सुनते क्योंकि उन्हें लगता है कि वे वाकई अच्छे हैं। भले ही उनके पास कानून न हो, लेकिन वे अपने विवेक को अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को नियंत्रित करने देते हैं।

वे दिखाते हैं कि व्यवस्था का काम उनके दिलों पर लिखा हुआ है। और यहाँ दूसरी बात आती है। अब इस पर ध्यान दें: दिल मेरा है।

उनका विवेक भी गवाही देता है, और उनके परस्पर विरोधी विचार उन्हें दोषी ठहराते हैं या यहाँ तक कि उन्हें उस दिन माफ़ भी कर देते हैं, जब मेरे सुसमाचार के अनुसार, परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों के रहस्यों का न्याय करेगा। इसलिए तथ्य यह है कि गैर-यहूदी सच्चाई पर ठोकर खा सकते हैं और यहूदियों की तुलना में बेहतर जीवन जी सकते हैं जब उनके पास कानून का विशेषाधिकार था। परिणामस्वरूप, हम यहाँ देखते हैं कि विवेक ही गवाह है।

वास्तव में, ध्यान दें कि यह बहुत स्पष्ट रूप से कहता है कि विवेक गवाही देता है। और यहूदी कानून के अनुसार नहीं जी रहे थे। क्यों? वे अपने विवेक को जला रहे थे।

वे अपनी अंतरात्मा को दबा रहे थे, जो उनसे कह रही थी, अरे, तुम कानून का पालन नहीं कर रहे हो। तुम उससे बेहतर जानते हो। और उन्होंने इसे इतने लंबे समय तक और इतनी गहराई से किया कि वे खुद को उस दुर्दशा से मुक्त नहीं कर सके। अब, ऐसे अन्य अंश हैं जो क्षमता के बारे में बात करते हैं।

मैंने उनमें से कुछ आपको यहाँ दिए हैं, और आप स्वयं उन अंशों को देखेंगे क्योंकि आप उस हैंडआउट को पढ़ने जा रहे हैं। इसके अलावा, विवेक मन में एक साक्षी के रूप में काम करता है। यह मॉनिटर है।

पेज तीन पर बिंदु संख्या दो पर ध्यान दें। मुझे खेद है, मेरी आवाज़ थोड़ी मोटी है। यहाँ फ्लोरिडा में मौसम बदल रहा है, और हम अपनी सर्दी में हैं, जो बिल्कुल भी बुरा नहीं है, लेकिन यह मेरी बोलने की क्षमता को प्रभावित करता है।

विवेक उस विश्वदृष्टि और मूल्य प्रणाली का साक्षी है जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। हमने अभी रोमियों 2.15 में पढ़ा है। ऐसे अन्य लोग भी हैं जिन्हें विवेक के साथ गवाही देने के लिए बुलाया जाता है। आप देखिए, क्या होता है कि हमारे पास एक दर्शक कक्ष और एक न्यायालय है। अगर आप चाहें, तो यही कल्पना है।

स्टैंड पर जज है। जज विश्वदृष्टि और मूल्यों को नियंत्रित करता है। हमारे पास एक बचाव वकील है, और हमारे पास एक अभियोक्ता वकील है।

एक तरह से, वे विवेक की तरह काम कर रहे हैं, उस व्यक्ति को यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि वे गलत हैं या यह तर्क देने की कोशिश कर रहे हैं कि वे सही थे। नतीजतन, आपके पास यह न्यायाधीश और गवाह है। विवेक ही गवाह है।

विश्वदृष्टि और मूल्य निर्णायक हैं। बहुत सारे विशेषण निर्माण हैं। ध्यान दें कि मैंने आपको वहां एक सूची दी है।

साफ़ विवेक। आपका विवेक साफ़ है। इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि विवेक ऐसी कोई बात नहीं कह रहा है जिससे लगे कि आप ग़लत हैं।

दूसरे शब्दों में, आप अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के साथ उचित तरीके से सहसंबंध बना रहे हैं। एक अच्छा विवेक मूल रूप से एक ही चीज़ है। और उन सभी अंशों को देखें।

मुझे लगता है कि मैंने शुरुआत में जो बताया था, वह यही है। मैं इस पर अनुमान नहीं लगाना चाहता। मुझे 20 या उससे ज़्यादा टेक्स्ट याद हैं।

हमें 27 पाठ मिले। 22 और 5 इब्रानियों में। ये सभी पॉलिन के हैं।

और पतरस के पास तीन हैं। तो, यह लगभग पूरी तरह से एक पॉलिन शब्द है, और यह मुख्य रूप से ईसाई पत्राचार में प्रयोग किया जाता है। तो, यह नए नियम में एक बहुत ही दिलचस्प शब्द है।

तो, विवेक मन में काम करता है। अब, मैं चाहता हूँ कि आप इसे यहाँ देखें। जब डेटा आता है, तो यह मन में आता है।

इस पर निर्णय लिया जाता है। और ध्यान दें कि विश्वदृष्टि और मूल्य अंतरात्मा से घिरे हुए हैं। अंतरात्मा विश्वदृष्टि और मूल्यों को देख रही है।

और यह आपको बता रहा है कि आप उनके साथ संघर्ष में हैं। और फिर यह मुझे दूसरी तरफ से नीचे गिरा देता है। हम बाद में आत्मा पर आएँगे।

और आत्मा बहुत हद तक विवेक की तरह काम करती है। आत्मा को साक्षी कहा जाता है। हम इन सी के साथ-साथ एस भी लगा सकते हैं।

और मैं बाद में ऐसा करूँगा। इस विश्वदृष्टि और मूल्यों में सभी तरह से। और आप देखेंगे कि विवेक और आत्मा मन में बहुत समान रूप से काम करते हैं।

जो हमें इस तथ्य पर वापस लाता है कि आप यह भी नहीं कह सकते कि मेरा विवेक साफ है। यदि आप कहते हैं, आत्मा ने मुझे बताया, तो आपका काम पूरा नहीं हुआ है। आपको यह प्रदर्शित करना होगा कि आपका दावा कि यह आत्मा है, पवित्रशास्त्र के पाठ से यह दिखाने की आपकी क्षमता से उचित होना चाहिए।

तो आप यह दावा करके स्वतंत्र नहीं हो जाते। ठीक है। तो, विवेक एक गवाह है।

इसके साथ ही, मॉनिटर शब्द में थोड़ा बहुत ओवरलैप है। विवेक निर्णय लेने के संबंध में हमारी सोच का मॉनिटर है। यह निर्णयों के लिए कारण नहीं बताता है।

लेकिन विवेक एक लाल और हरी बत्ती की तरह है जो निर्णयों के संबंध में, आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के संबंध में यातायात को निर्देशित करती है। तो, उस कथन के साथ, विवेक को अपना मार्गदर्शक बनने दें। खैर, आपको अपने अंदर की उस बातचीत पर ध्यान देना होगा।

क्योंकि यह ईश्वर द्वारा दी गई क्षमता है जो ईश्वर की छवि में बनाई गई है, इसलिए आपको इस पर ध्यान देना होगा। लेकिन आप इसे करने में भोले नहीं हो सकते।

आपको यह समझना होगा कि जब आप इस बातचीत में शामिल होते हैं, तो आपको यह सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी होती है कि आपके विश्वदृष्टि मूल्य सही हैं। कि आपने वास्तव में अपनी सोच बदल ली है। और यह कि आप पुरानी प्रकृति से काम नहीं कर रहे हैं, बल्कि आप नई प्रकृति से काम कर रहे हैं।

ठीक है। पेज तीन पर। बिना पूछे, अच्छा, एक मिनट रुको।

मैं जाना चाहता हूँ; इससे पहले कि मैं वहाँ से चला जाऊँ, मैं आपको एक क्षण के लिए 1 कुरिन्थियों अध्याय 10 पर ले जाना चाहता हूँ, यदि आप बुरा न मानें। 1 कुरिन्थियों अध्याय 10। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसे समझना थोड़ा कठिन है, क्योंकि आप स्वाभाविक रूप से इस तरह नहीं सोचते हैं।

लेकिन 1 कुरिन्थियों अध्याय 10, पद 23 से 30, और पद 25 में, पद 25, 10, 25 को देखिए। यह अध्याय 10 नहीं है। ओह, मुझे वहाँ कुछ समझ में आया।

ओह, मैं 2 कुरिन्थियों में हूँ। इसके लिए क्षमा करें। 1 कुरिन्थियों।

मुझे पता था कि कुछ गड़बड़ है। 1 कुरिन्थियों अध्याय 10 और श्लोक 25। ठीक है।

पॉल कुरिन्थ में मूर्तियों को भेंट चढ़ाए जाने की समस्या से निपट रहा है। देखिए वह किससे निपट रहा है, जो कि आपका पुराना विश्वदृष्टिकोण है। आपका पुराना विश्वदृष्टिकोण आपको बताता है कि मूर्तियाँ कुछ हैं और आपको उससे परे जाना होगा।

और वह आकर उससे निपटता है, बलवान और निर्बल दोनों से। जैसा कि आपको याद होगा, श्लोक 23 को देखिए। क्षमा करें।

सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ फ़ायदेमंद नहीं है। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ उन्नति नहीं देता। कोई भी व्यक्ति अपना भला न चाहे बल्कि अपने पड़ोसी का भला चाहे।

मांस बाजार में जो भी बिक रहा है, उसे बिना किसी सवाल के खाओ। अब, यह ESV है। किंग जेम्स संस्करण में बिना कोई सवाल पूछे कहा गया है।

और बहुत से लोगों ने कहा, अगर आप किसी संदिग्ध परिस्थिति में सवाल नहीं पूछते हैं, तो आप जिम्मेदार नहीं हैं। खैर, यह मूर्खतापूर्ण है। क्या पॉल कहेंगे, ठीक है, जो आप नहीं जानते हैं वह आपको नुकसान नहीं पहुँचाएगा? क्या पॉल कभी ऐसा कहेंगे? नहीं, यह पाठ ऐसा नहीं कह रहा है।

यहाँ एक नया संस्करण है, यहाँ तक कि इस विशेष स्थिति में ESV भी, इसे उन्नत करता है और विवेक के आधार पर कोई सवाल उठाए बिना कहता है। आप देखिए, कमज़ोर भाई, जिनके विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों में अच्छी तरह से बदलाव नहीं हुआ था, उन्होंने सोचा कि वह मांस अभी भी मूर्तिपूजा से दूषित था। पॉल कहते हैं कि मांस कुछ भी नहीं है।

मूर्तियाँ कुछ भी नहीं हैं। वे अस्तित्व में नहीं हैं। इसलिए, आप उन्हें खा सकते हैं।

लेकिन चूँकि वह उन लोगों से निपट रहा था जिनका मन बदल चुका था, जो अकेले रहने के लिए काफी समय से नहीं चले थे, इसलिए उसने कहा, खाओ, लेकिन विवेक के आधार पर सवाल मत पूछो। क्यों? क्योंकि विवेक वह आधार नहीं है जिस पर आप सवाल पूछते हैं। यह विश्वदृष्टि और मूल्य हैं।

यह पाठ इस पूरे विचार को सामने लाता है कि विश्वदृष्टि और मूल्य ही सही और गलत का निर्धारण करते हैं, न कि विवेक। विवेक काम करता है। और जब आपका विश्वदृष्टि और मूल्य गलत होते हैं, तो हाँ, ये ईसाई दोषी महसूस कर रहे थे।

लेकिन पॉल कह रहा था, तुम्हें साथ आना होगा। तुम्हें समझना होगा कि पुराना जीवन पुराना जीवन है। नया जीवन नया जीवन है।

और इसलिए, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैं सुझाव दूंगा, और शायद हम इसे ढूंढकर इस विशेष मॉड्यूल में डाल सकते हैं। डॉ. हिल्डेब्रांट इसके लिए लेख ढूंढ रहे हैं।

मेरी ग्रंथसूची में, गूच का वह लेख 1 कुरिन्थियों 10 को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए, आप विवेक के आधार पर प्रश्न नहीं पूछते। आप अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के आधार पर प्रश्न पूछते हैं क्योंकि विवेक आपको केवल यह समझा रहा है कि आपको वे प्रश्न पूछने की आवश्यकता है।

आपको यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि विश्वदृष्टि और मूल्य सही हैं। यही कुंजी है। फिर, विवेक को सही चीजों के साथ तालमेल बिठाना होगा क्योंकि विश्वदृष्टि और मूल्य ही निर्णायक हैं।

विवेक केवल आपके वर्तमान विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों का साक्षी है, लेकिन वे संशोधन और चुनौती के लिए खुले हैं। यह रोमियों 12:1 और 2 के संबंध में परिपक्वता का एक हिस्सा है। मैंने इसका उल्लेख यहाँ पृष्ठ तीन पर सबसे ऊपर किया है।

नोट्स के अंत में मेरी ग्रंथ सूची में गूच का लेख देखें। तो, यहाँ निष्कर्ष क्या हैं? खैर, विवेक आपके विश्वदृष्टिकोण और मूल्य सेट का निर्माण नहीं करता है। विश्वदृष्टिकोण और मूल्य एक सेट है जो आपके परिवर्तित मन की परिपक्वता द्वारा बनाया गया है।

विवेक विश्वदृष्टि और मूल्यों का साक्षी है। मैंने यह बात बार-बार कही है। मुझे पता है कि मैं बहुत दोहराव कर रहा हूँ, लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह बात असरदार होगी।

विवेक केवल हमारे विश्वदृष्टिकोण की निगरानी करता है, जो हमारा है और जिसे हम पहचानते हैं और लागू करते हैं। पहचाना और लागू किया गया वाक्यांश एफएफ ब्रूस से लिया गया था। यह वर्षों से मेरे साथ जुड़ा हुआ है।

ठीक है, मुझे वहाँ वापस जाना चाहिए क्योंकि स्लाइड्स का अंत यहीं है। ठीक है, तो यह आपके लिए है। मैंने आपको अध्ययन करने और बेरिया के लोगों की तरह काम करने और इस मुद्दे पर सोचने के लिए पर्याप्त सामग्री दी है।

आपको जिस बात पर विचार करना होगा, उसका सबसे कठिन हिस्सा वह है जो 1 कुरिन्थियों से संबंधित है, यह समझना कि आप विवेक के आधार पर प्रश्न नहीं पूछते हैं। आप विश्वदृष्टि और मूल्यों के आधार पर प्रश्न पूछते हैं। पॉल कुरिन्थ में एक समूह का सामना कर रहा था, जिसका परिवर्तित मन उनके पीछे था, और वह उन्हें अपने साथ लाने की कोशिश कर रहा था।

उन्होंने यह बहुत ही विनम्रता से किया। वास्तव में, कोरिंथियन संदर्भ इस बात की ओर इशारा करता है। कभी-कभी, आप उस चीज़ से समझौता कर लेते हैं जिसे आप जानते हैं कि वह ठीक है, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए जो आपके साथ नहीं आया है।

अब, मैं आपसे यह सवाल पूछता हूँ। आप उन लोगों के साथ क्या करते हैं जिनका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य आक्रामक हैं? वे अपना मन बदलने से इनकार करते हैं, तब भी जब आप उन्हें बाइबल से दिखा सकते हैं कि क्या सच है। मूर्तियों को चढ़ाए जाने वाले मांस के बारे में उनका मन बदलने में पॉल को परेशानी हो रही थी।

इसलिए, जब वे साथ आने से मना कर देते हैं तो आप क्या करते हैं? खैर, मैं इसे इस तरह से कहूँगा। जो लोग बदलाव के दौर से गुज़र रहे हैं, और आपके आस-पास हमेशा ऐसे ईसाई होंगे जो अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों में बदलाव के दौर से गुज़र रहे हैं, आपको उनके साथ नरमी से पेश आना होगा। कभी-कभी आपको उनकी मदद करने के लिए खुद को किसी चीज़ से दूर रखना पड़ता है।

लेकिन अगर यह सिलसिला चलता रहा, तो समस्या यह है कि वे अब कमज़ोर नहीं रह गए हैं। वे आक्रामक हो रहे हैं। वे सीखने से इनकार कर रहे हैं।

जो लोग सीखने से इनकार करते हैं, उनके साथ उन लोगों से अलग व्यवहार किया जाता है जो कोमलता से बदलाव कर रहे हैं। अब, शायद इसके लिए थोड़ा ज़्यादा काम करना होगा, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में आपको सोचना ज़रूरी है। तो, विवेक।

अब, यहाँ हमारे लिए एक संक्षिप्त सत्र है। लेकिन सच तो यह है कि यह आपके लिए वास्तव में नई सामग्री है क्योंकि लोगों के पास विवेक के बारे में रूढ़ियाँ हैं। और स्पष्ट रूप से, मुझे लगता है कि जब आप बाइबिल के साक्ष्य को देखते हैं, बाइबिल की सामग्री जो हमारे सामने विवेक प्रस्तुत करती है, तो आप देखेंगे कि यह एक गवाह है, न्यायाधीश नहीं।

और यह विश्वदृष्टि और मूल्यों का साक्षी है। और वे न्यायाधीश हैं। और फिर भी, एक ईसाई की परिपक्वता की प्रक्रिया में, आपको अपने विश्वदृष्टि और मूल्यों को समायोजित करना होगा जैसा कि शास्त्र आपको सिखाते हैं और आपको सूचित करते हैं।

वह पहली पीढ़ी का वीडियो है जिसे मैं चाहता हूँ कि जब मैं स्वर्ग जाऊँ तो भगवान मेरे लिए फिर से चलाएँ। मैं इस बारे में और अधिक जानना चाहता हूँ कि यहोवा में विश्वास करने वाले यहूदियों के लिए मसीहा के रूप में मसीह में परिवर्तन करना कितना कठिन था। अगर वे सच्चे आस्तिक थे, तो उन्होंने अपना उद्धार नहीं खोया।

काम की किताब में गवाह देखते हैं कि उनके लिए यह कितना मुश्किल था।

परिणामस्वरूप, जैसे-जैसे हम अपना परिवर्तन करते हैं, हम इसे परिवर्तित मन और विवेक के माध्यम से करते हैं। कभी-कभी, इसके साथ आने में थोड़ा समय लगता है, लेकिन यह विश्वदृष्टि और मूल्यों के अधीन है। यह उसी से निर्देशित होता है, किसी और चीज़ से नहीं। और इसलिए इसे कभी-कभी थोड़ी पुनः शिक्षा से गुजरना पड़ता है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, कुरिन्थ में कमज़ोर भाई को अपनी सोच को आत्मसात करने में तब तक परेशानी होगी जब तक कि वे बदलाव नहीं कर लेते। पॉल उनके साथ इस तरह से पेश आ

रहा था कि वह उन्हें साथ लाने में मदद कर सके। पॉल ने उस आधार पर विश्वदृष्टि और मूल्यों से समझौता नहीं किया, बल्कि उसने विश्वदृष्टि और मूल्यों को सिखाया और परिणामस्वरूप उन्हें साथ लाया।

तो, विवेक और निर्णय लेना। विवेक, जब आप निर्णय लेने के लिए काम कर रहे होते हैं, चाहे वह बड़े निर्णय हों, जैसे युद्ध, ट्रांसजेंडर, और जीवन और मृत्यु के मुद्दे, इच्छामृत्यु, और इसी तरह के अन्य, या फिर चाहे वह आपके अपने निजी जीवन के निर्णय हों, आपको यह याद रखना होगा कि भले ही आपकी आंतरिक आवाज़ आपको कुछ न कुछ बता रही हो, लेकिन आप उसकी बात नहीं सुनते। आप जो सुनते हैं वह आपका विश्वदृष्टिकोण और मूल्य हैं।

अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों के साथ संपर्क में रहें। धर्मग्रंथों में जाकर अपने विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को समायोजित करें और शिक्षित करें ताकि आप ऐसे निर्णय ले सकें जो आपके अपने मन के बजाय ईश्वर के मन के अनुरूप हों। यह कभी भी पूरी तरह से नहीं होगा।

मेरे विचार आपके विचार नहीं हैं। क्यों? क्योंकि हम मानव प्राणी हैं। हम सृजित प्राणी हैं, और वह ईश्वर है।

हम इसे कभी हासिल नहीं कर पाएंगे। वास्तव में, अनंत काल तक, आप सीखते रहेंगे। यही अनंत काल है: जीवन की एक शाश्वत सीख क्योंकि हम कभी भी ईश्वर नहीं बनेंगे, और हम कभी भी अनंत को समाप्त नहीं करेंगे।

इसलिए, यदि आपको अभी सीखना पसंद नहीं है, तो आप अनंत काल तक परेशानी में रहेंगे क्योंकि आप अनंत काल तक ईश्वर के बारे में सीखते रहेंगे और उसी आधार पर उसकी पूजा करते रहेंगे। तो, यह विवेक है। हमारा अगला व्याख्यान पवित्र आत्मा पर होगा, और आपके पास कुछ दिन-प्रतिदिन की गतिविधियाँ होंगी कि हम आत्मा के बारे में कैसे बात करते हैं और हमने विवेक के बारे में कैसे बात की है क्योंकि शास्त्र उन्हें बहुत ही समान तरीकों से प्रस्तुत करते हैं।

धन्यवाद, और मुझे विश्वास है कि आपका दिन बहुत अच्छा होगा और यह सामग्री आपके जीवन में आपकी मदद करेगी।